अध्याय 3.9

सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र इलाहाबाद

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के अधीन एक उन्नत केन्द्र के रूप में अक्टूबर, 1992 में स्थापित किया गया था। वर्तमान में, यह वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की एक शाखा है। इस केन्द्र का उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी बिहार और उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन के क्षेत्र में व्यावसायिक विशिष्टता का पोषण एवं संवर्धन करना है।

वर्ष 2005–2006 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : इलाहाबाद जिले के विन्ध्य रेंज में सूक्ष्मजीवी प्रौद्योगिकी द्वारा सिलिका खनन भूभागों का पुर्नवनस्पतिकरण (एफ आर आई–141 / सी एस एफ ई आर–01)

उपलब्धियां : चयनित प्रजातियों पर जैवउर्वरकों – एजोटोबैक्टर, राइजोबियम, फॉस्फेट विलेयन जीवाणुओं, ब्लू ग्रीन एल्गी और बेसिकुलर आर्बूस्कूलर माइकोराजजा का उपयोग किया और उल्लेखनीय परिणाम देखे। पौधशाला परीक्षण परिणामों ने दर्शाया कि नियंत्रण की तुलना में विभिन्न जैव उर्वरक संयोजनों के साथ उपचारित बीजों में अंकुरण समय घटा। शंकरगढ़, इलाहाबाद के सिलिका खनन भूभाग में इन संरोपित पौधों के क्षेत्र परीक्षण के परिणामों ने दर्शाया कि दो अन्य प्रजातियों की अपेक्षा पौगेमिया पिन्नाटा और ब्युटीया मोनोस्पर्मा ने अच्छा प्रदर्शन किया।

वर्ष 2005–2006 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : स्थानीय लोगों में जागरूकता सृजन के लिए औषधीय पादप पौधशाला का विकास करना (एफ आर आई– 254 / सी एस एफ ई आर–05)

स्थिति : चयनित औषधीय प्रजातियों को अनुसंधान पौधशाला के शाकीय उद्यान में रोपित और पोषित किया। स्थानीय लोगों में जागरूकता के लिए प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का आयोजन किया।

वर्ष 2005–2006 के दौरान जारी परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रम के तहत जैट्रोफा का अनुसंधान एवं विकास (नोवोड बोर्ड द्वारा प्रायोजित)

स्थिति : इलाहाबाद जिले के एक निम्नीकृत स्थल, शंकरगढ़ के सिलिका खनन क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (I and टी एफ आर आई II) से प्राप्त और शंकरगढ़, इलाहाबाद (सी एस एफ ई आर I) में चिह्नित कैन्डिडेट धन वृक्षों से प्राप्त बीजों से जैट्रोफा के सन्तति क्षेत्र परीक्षण किए गए। उत्तरजीविता एवं वृद्धि आँकड़े अभिलिखित किए गए। जैट्रोफा के राष्ट्रीय नेटवर्किंग परीक्षण की स्थापना करने के लिए, सम्पूर्ण भारत के विभिन्न शोध संगठनों से प्राप्त बीजों से उगाए पौधों को, वर्षा पर आधारित अवस्था के तहत शंकरगढ़, इलाहाबाद के सिलिका खनन क्षेत्र में तीन प्रतिकृतियों और 2 मी x 2 मी अन्तराल के साथ यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में क्षेत्र में रोपित किया गया। जोनल पथ के लिए, विभिन्न जोनल केन्द्रों से प्राप्त बीजों से उगाए गए पौधों को वर्षा पर आधारित अवस्था के तहत शंकरगढ़, इलाहाबाद के सिलिका खनन क्षेत्र में तीन प्रतिकृतियों 2 मी x 2 मी अन्तराल के साथ यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में क्षेत्र में रोपित किया गया।

शंकरगढ़, इलाहाबाद के सिलिका खनन क्षेत्र में 9300 पादपों के साथ एक ब्लॉक रोपण स्थापित किया गया और कृषि वानिकी परीक्षण में पडिला पौधशाला में 700 पादप रोपित किए। गत वर्षों में चिह्नित किए गए कैन्डिडेट धन वृक्षों के ऋतुजैविकीय

अध्ययन किए गए। पूर्वी उत्तर प्रदेश में नोवोड बोर्ड द्वारा निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार उत्कृष्ट रोपण स्टॉक का सर्वेक्षण किया गया। पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में कुल बाइस कैन्डिडेट धन वृक्षों को चिह्नित किया गया। बीज अभिलक्ष्णण, यथा – बीज व्यास, बीज लम्बाई और प्रति 100 ग्राम बीजों की संख्या, अभिलिखित किए गए। चिह्नित कैन्डिडेट धन वृक्षों से बीज एकत्र करके रासायनिक मूल्यांकन हेतु टी ई आर आई, नई दिल्ली भेजे।

चिह्नित बीस कैन्डिडेट घन वृक्षों से एकत्रित बीजों से पौधशाला तैयार की गई।

नोवोड परियोजना के तहत पडिला पौधशाला में जैट्रोफा पौधे

सारांशः परियोजनाओं की संख्या

	2005–2006 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2005–2006 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2005–2006 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	1	1	–
बाहय परियोजनाएं	–	1	–
कुल	1	2	–

शिक्षा और प्रशिक्षण

जैट्रोफा के अनुसंधान एवं विकास पर किसानों के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। पौधशाला, रोपण विधियों, क्षेत्र प्रदर्शन, विभिन्न उपयोग और बीज तेल का बायोडीजल उपयोग से संबंधित तकनीकों को सहभागियों को बताया और विचार–विमर्श किया। स्थलों पर जैट्रोफा के बारे में इनकी जानकारी को सशक्त बनाने हेतु सहभागियों के लिए क्षेत्र भ्रमण भी आयोजित किया गया।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

आयोजित

1. जैट्रोफा के अनुसंधान एवं विकास पर 28 और 29 मार्च 2006 को नोवोड परियोजना के तहत किसानों के दो प्रशिक्षण।
2. औषधीय पादपों पर 30 मार्च 2006 को प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम।

सहभागिता

श्री बिरेन्द्र चौधरी, भा.व.से. ने 22 फरवरी 2006 को सी आई आई, नई दिल्ली में वानिकी पर राष्ट्रीय सम्मेलन और 20 और 21 मार्च 2006 को व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय, देहरादून में वानिकी शिक्षा : विषय एवं सुअवसर'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

श्री एम.एल. अरावाटिया, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक, सिक्किम ने 24 से 26 अक्टूबर 2005 तक केन्द्र का भ्रमण किया। उन्होंने केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला का भी भ्रमण किया।